परमेश्वर का क्रोध का प्याला भरता जा रहा है

व्यवस्थाविवरण 22:5 में परमेश्वर यह आज्ञा देता है:

“स्त्री पुरुष की पोशाक न पहने, और न पुरुष स्त्री का वस्त्र पहिने; क्योंकि जो ऐसा करते हैं वे सब यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर के लिये घृणित हैं।”
(व्यवस्थाविवरण 22:5, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

यह व्यवस्था दर्शाती है कि परमेश्वर ने स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं और पहचानों में जो अंतर रखा है, उसे बनाए रखना परम आवश्यक है – जिसमें बाहरी रूप भी सम्मिलित है। यह भेदभाव सृष्टि की उस व्यवस्था को दर्शाता है जिसे परमेश्वर ने आरंभ में स्थापित किया:

“और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न
किया; अपने ही स्वरूप के अनुसार उसको उत्पन्न किया; और उसने उन्हें नर और नारी कर के उत्पन्न किया।”
(उत्पत्ति 1:27, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

जो कोई इस व्यवस्था को अस्वीकार करता है, वह परमेश्वर की दृष्टि में एक गंभीर अपराध करता है। “घृणित” शब्द (हिब्रू में to’evah) यह सूचित करता है कि ऐसी बातें परमेश्वर को अत्यंत अप्रिय और अपवित्र प्रतीत होती हैं। यह उसकी पवित्रता और अपने लोगों में व्यवस्था बनाए रखने की इच्छा को प्रकट करता है।

हालांकि परमेश्वर ने यह बात स्पष्ट रूप से कही है, फिर भी बहुत से लोग उसके नैतिक नियमों को अस्वीकार करते हैं। वह अपने भविष्यद्वक्ताओं और दूतों के माध्यम से बारंबार चेतावनी देता है, परंतु लोग हँसी उड़ाते हैं, अपने मनों को कठोर बना लेते हैं और सुनना नहीं चाहते।

प्रेरित पौलुस इस आत्मिक सच्चाई को रोमियों 1:18–28 में स्पष्ट करता है:

“क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उन लोगों की सारी अधार्मिकता
और अन्याय पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो अन्याय से सत्य को दबाते हैं… क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से उसकी अदृश्यता,
अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य और परमात्मत्व, उसके कार्यों
के द्वारा जानने और देखने में आता है; इसलिए वे निरुत्तर हैं।”
(रोमियों 1:18, 20, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

यह वचन सिखाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति और उसका स्वरूप सृष्टि के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसलिए मानवजाति को उसे पहचानना आवश्यक है। लेकिन बहुत लोग इस सत्य को दबाकर पाप का मार्ग चुनते हैं। पौलुस आगे कहता है:

“वे परमेश्वर को जानकर भी उसे परमेश्वर के रूप में महिमा न
दी… इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया… और उनकी स्त्रियों ने स्वाभाविक व्यवहार को विपरीत स्वभाव में बदल दिया। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर एक-दूसरे के प्रति वासना में जलने लगे… और उन्होंने अपने पाप
का योग्य दण्ड अपने ही शरीर में पाया।”
(रोमियों 1:21, 24, 26–27, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

यह एक गहन आत्मिक सिद्धांत है – जब लोग परमेश्वर की सच्चाई को लगातार अस्वीकार करते हैं, तब वह उन्हें उनके पापों की दया पर छोड़ देता है। यूनानी शब्द paradidōmi (छोड़ देना) इसी प्रकार के न्यायिक परित्याग को दर्शाता है।

यह स्थिति हमें स्मरण दिलाती है कि अंतिम समय में नैतिक पतन और संकट के दिन होंगे, जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:1 में चेतावनी दी गई है:

“पर यह जान ले कि अंतिम दिनों में संकटपूर्ण समय आएंगे।”
(2 तीमुथियुस 3:1, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

तो आज हमारे लिए इसका क्या अर्थ है?

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है: क्या आप उद्धार प्राप्त कर चुके हैं?

क्या आपने अपना जीवन यीशु मसीह को समर्पित किया है — जो एकमात्र उद्धारकर्ता है?
क्या आपने परमेश्वर का वह अंतिम समय का संदेश स्वीकार किया है, जो उसके सेवक भाई विलियम मॅरियन ब्रानहम के द्वारा दिया गया — वह दूत जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3 में वर्णित अंतिम कलीसियाई युग में आया था?

यदि नहीं, तो पवित्रशास्त्र आपको आज ही जवाब देने को कहता है। अनुग्रह का द्वार सदा के लिए खुला नहीं रहेगा:

“देख, मैं द्वार पर खड़ा होकर खटखटा रहा हूँ; यदि कोई मेरा
शब्द सुनकर द्वार खोले, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ

भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।”
(प्रकाशितवाक्य 3:20, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

“यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने हृदयों को कठोर मत
बनाओ।”
(इब्रानियों 3:15, पवित्र बाइबल: हिंदी ओ.वी.)

आज ही प्रभु की ओर लौट आओ — इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

परमेश्वर तुम्हें भरपूर आशीष दे।

Share on:
WhatsApp